अध्याय 15

अलंकार

अलंकार के अर्थ होला 'गहना'। जइसे सोना-चानी के गहना से देह के सुनरता बढ़ जाले, ओही तरह से जवना उपकरण से काव्य के शोभा-सुन्दरता बढ़ेलें, ओकरा के अलंकार कहल जाला। 'अलंकार' शब्द के व्युत्पति मूलक अर्थ बतावत कहल गइल बा कि जे अलंकृत मतलब शोभा बढ़ावे ऊ अलंकार ह।

काव्य के सुन्दरता कबो शब्द पर निर्भर होला त कबो अर्थ पर आ कबो-कबो ई सुन्दरता शब्द आ अर्थ दूनों पर टिकल होला। काव्य के शोभा बढ़ावे वाला अलंकारन के एह तीनों स्थिति के आधार पर अलंकार के तीन गो प्रकार बतावल गइल बा-

1. **शब्दालंकार**- जहँवा शब्दगत अलंकार होखे।
2. **अर्थालंकार**- जहँवा अर्थगत अलंकार होखे।
3. **शब्दार्थालंकार**-जहाँ वा शब्दार्थगत अलंकार होखे। शब्दार्थालंकार के उभयालंकार भी कहल जाला।

अब इहाँ काव्य के शब्दालंकार, अर्थालंकार आ शब्दार्थालंकार के सामान्य ज्ञान खातिर इहवाँ के कुछ अलंकारन के लक्षण आ ओकर उदाहरण प्रस्तुत कइल जाईं जइसे शब्दालंकार के रूप में अनुप्रास (छेकानुप्रास,

वृत्त्यानुप्रास आ लाटानुप्रास), श्लेष आ वक्रोक्ति, अर्थालंकार के रूप में उपमा, रूपक, दृष्टान्त, संदेह, विभावना, आ अतिशयोक्ति अलंकार के लक्षण आ उदाहरण दिहल जा रहल बा।

शब्दालंकार

अनुप्रास

जहाँ व्यंजन के समता होखे, भले उनकर स्वर मिले चाहे ना, उहाँ अनुप्रास अलंकार होला। अनुप्रास में तीन खण्ड बा-अनु-प्र+आस। 'अनु' के मतलब होला आवृत्ति, 'प्र' के प्रकर्ष आ 'आस' के अर्थ होई राखल चाहे विन्यास कइल। मिला-जुला के एकर अर्थ भइल जहाँ पर वर्ण बार-बार आवृत्ति के साथ जवरे-जवरे राखल जाय। एकर कई गो भेद होला-

छेकानुप्रास-जब अनेक व्यंजन के एक बेर स्वरूप आ क्रम से आवृत्ति होखे, त ओकरा के छेकानुप्रास कहल जाल। श्री विश्वनाथ कविराज के कहनाम बा-

''छेकेव्यंजनसंघस्य सकृत साम्यमनेकधा''।

-साहित्य दर्पण (दशम परिच्छेद, नवम् संस्करण)

उदाहरण - सुरपुर नरपुर नाग नगरिया

रंग विरंगी बाग बजरिया

अधरम धरम, करम कुकरम के

-रघुनाथशरण शुक्ल 'कुवोध' (के, पृ॰ 8)

इहाँ 'सुरपुर नरपुर' में र प र के, 'नाग नगरिया' में न आ ग के, 'रंग बिरंगी' में र आ ग के, 'बाग बजरिया' में ब के, 'अधरम धरम' में ध रम के, आ 'करम कुकरम' में क र म के एक-एक बेर आवृत्ति से छेकानुप्रास होई।

वृत्यानुप्रास - अगर जे एक व्यंजन के एक बेर चाहे अनेक बेर, अनेक व्यंजन के एक बेर चाहे अनेक बेर स्वरूप से भा अनेक व्यंजन के स्वरूप आ क्रम से आवृत्ति होखेला, त वृत्यानुप्रास कहल जाला। विश्वनाथ कविराज के कथन बा-

''अनेकस्येकधा साम्यमसकृतद्वापयनेकधा।

एकस्य सकृदप्येव कृत्यानुप्रास उच्यते ॥41॥

-साहित्य दर्पण (द०प०), पृ० 275

उदाहरण- दन दनात, दन-दनदनात दन-दन-दन-दन

फन फनात, फन-फनफनात फन-फन-फन-फन

-अविनाशचन्द्र 'विद्यार्थी' (सेवकायन) पृ० 51

इहाँ पहिलकी पाँति में द आ न के आउर दोसरका पाँति में फ आ न के कतना बेर स्वरूप आ क्रम से आवृत्ति भइल बाटे।

अइसहीं- **बगिया बेयरिया बहारे बसंत चाहे आवे ना आवे**

केसिया किरनिया सँवारे बसंत चाहे आवे ना आवे

कुमार विमल (किरिन छुअत दरपन) पृ० 17

इहाँ पहिलकी पाँति में शब्द के शुरू में व्यंजन के कई बेर आवृत्ति भइला से वृत्यानुप्रास के उदाहरण बा।

लाटानुप्रास-जहाँ शब्द आ अर्थ के आवृत्ति में अभिप्राय मात्र के भिन्नता होखे, उहाँ लाटानुप्रास होला। विश्वनाथ कविराज के अनुसार-

''शब्दार्थयो पौनरूक्त्यं भेदे तात्पर्यमात्रतः। लाटानुप्रास इत्युक्तो।''

-**साहित्य दर्पण** (द०प०), पृ० 277

उदाहरण- **लोहन से लोह कटई, काँटन से काँट कढ़ई**
पुतरी कऽचोट खाई घायल पुतरिया।
बेंटन जब काठ क टँगारिन में लागि जाले
काटि देले काठन क मोट मोट डरिया।
जतिया कऽ बैरी बनि जाति बड़ि दुखदेई,
कुकुर के देखतई भूँकेली कुकुरिया।
गौरन की ओर से लड़ल डुमराँव राज
हाइ भोजपुरिया कि खाई भोजपुरिया।

-**चन्द्रशेखर मिश्र** (कुअँर सिंह, पृ० 228)

इहाँ लोहा, काँट, काठ, जाति, कुकुर आ भोजपुरिया शब्द के आ एकनी के अर्थ के एक रहलो पर तात्पर्य भेद बा। एगो लोहा काटे वाला, दोसर कटाये वाला, एक काँट गड़े वाला, एक गड़ल काँट काढ़ै वाला, एगो काठ काटे वाला त दोसर कटाये वाला, एक जाति दुखी त दोसर क दुख देवे वाला, एक कुकुर भूँके वाला त दोसर देखल जाए वाला आ एक

भोजपुरिया धोखा देवे वाला त दोसर धोखा खाये वाला बाटे। एही से इहाँ लाटानुप्रास अलंकार बा।

श्लेष

श्लिष्ट शब्दन से अनेक अर्थ के कथन के श्लेष अलंकार कहल जाला। जहवाँ एके शब्द से अनेक अर्थ निकले, उहाँ श्लेष अलंकार होला। विश्वनाथ कविराज के परिभाषा बाटे-

''श्लिष्टैः पदैरनेकार्याभिधाने' श्लेष इष्यते।
शब्दै : स्वभावदेकार्थैः श्लेषोऽनेकार्थवाचनम्।11''

-**साहित्यदर्पण** (द॰प॰), पृ॰ 282

श्लेष के दू भेद-'अभंगश्लेष' आ 'सभंगश्लेष' होला। जहाँ पद के बिना भंगले अन्यार्थ के प्रतीत हो जाए, उहाँ अभंगश्लेष होई।

जहाँ एक से अधिक अर्थ के प्रतीति श्लिष्ट शब्दन के अवयव के भंग करके कइल जाए, उहाँ सभंगश्लेष होई।

उदाहरण-**आज बरसाइत रगरवा मचावे जिन नहके झगरवा उठाव**
अपनो ही बरवा में पूजो बलबीरवा पीपरवा पूजन तू हीं जाब।

-**रामकृष्ण वर्मा बलबीर** (भोजपुरी के कवि ओर काव्य, पृ॰) 143)

इहाँ 'बरवा' के बिना भंग कइले 'बरगद के गाछ' आ 'प्रियतम', दू गो अर्थ निकलत बा, एही से इहाँ अभंगश्लेष बा। 'पीपरवा' में 'पीपर के गाछ' आ 'दोसरा के पिया' ई दू अर्थ निकलत बा। इहाँ सभंगश्लेष बा।

एगो उदाहरण इहाँ आउर दिहल जा रहल बा-

चढ़ी जे कमान त कमान घूम भाग चली

चारा ना चली कबो पइब ना चारा तू

बानन के चोट खाके बान मय छूट जाई

तारा से देख लेब, दुपहरिये तारा तू

उजड़ जाई नीर दूनू नयनन से नीर झड़ी

पारा के चढ़ते दरकब बनि पारा तू

बाजी अब लागल तब बाजी ना तोहार चली

कारा का होते समा जइब कारा तू

-गणेशदत्त किरण (किरण बावनी)

इहाँ कमान, चारा, बान, तारा, नीर, पारा, बाजी आ कारा जइसन शब्दन से अनेक अर्थ निकलला के कारण श्लेषालंकार होई।

वक्रोक्ति

अगर वक्ता के अन्यार्थक वाक्य के श्लेष चाहे काकु से श्रोता अलग अर्थ लगावे त वक्रोक्ति अलंकार होई। विश्वनाथ के परिभाषा बा-

''अन्यस्यान्यार्थक वाक्यम् अन्यथा योजयेद्यदि।

अन्यः श्लेषेषा काक्वा वा सा वक्रोक्तिस्ततोधद्विः।''

-साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 280

काकु के अर्थ होला कंठ से विशेष ढ़ंग से आवाज निकाल के बोलल।

उदाहरण- **राजसूय यज्ञ भैल, शिशुपाल बधि भैल**

अपने से धर्म के महान अब मनि हैं

-चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी)

इहाँ 'धर्म के दू अर्थ हो सकत बा, एक जवन धारण कइल जाय आ दोसर युधिष्ठिर।

आउर सबै रंग दाबत-दूबत

अंबर चीरि पीतंबर आइल

-चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी, पृ॰ 126)

इहाँ चीरहरण के समय चीर बढ़ावे के प्रसंग में ई पाँति आइल बाटे, जवना के अर्थ इहो बा कि आकाश मार्ग से श्रीकृष्ण अइलन। अम्बर के अर्थ कपड़ा आ आकाश दुनों होला अउर पीतंबर के पीअर कपड़ा आ श्री कृष्ण दुनों अर्थ होला।

अर्थालंकार-

उपमा

विश्वनाथ उपमा के परिभाषा देले बाड़न-

''साम्यं वाच्यं वैधर्म्य वाक्यैक्य उपमा द्वयोः॥14॥

-साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 262

मतलब कि दू पदार्थ में भिन्नता के बावजूद समानता बतवला के 'उपमा' कहल जाला। अर्थालंकार के मूल आधार उपमा बाटे। उपमा के चार गो अंग होला उपमेय, उपमान, धर्म आ वाचक। 'उपमेय' ओकरा के कहल जाला जेकर बराबरी देखावल जाए, मतलब कि वर्णनीय विषयवस्तु आ प्रकृति। 'उपमान' ओकरा के कहल जाला जवना से कवनों वस्तु के मेल देखावल जाला। 'धर्म' ओह गुण आ विशेषता के कहल जाला जवन उपमेय आ उपमान दुनों में पावल जाला। 'मुँह चंदा अस चमकत बा' में चंदा आ मुँह के चमकल 'धर्म' बाटे। उपमेय आ उपमान के बराबरी देखावेवाला शब्द के 'वाचक' कहल जाला। जस, अस, जइसन, अइसन, ओइसन आदि एकर उदाहरण बाटे।

उपमा के मुख्य रूप से दू गो भेद होला-**'पूर्णोपमा'** आउर **'लुप्तोपमा'। पूर्णोपमा**

विश्वनाथ के अनुसार-**सा पूर्णा यदि सामान्य धर्म औपम्यवाचि च उपमेयं चोपमानं भवेद्व्याव्यम्।** (इयंपुनः) ॥ 12 ॥

मतलब कि, उपमा के चारों अंग के अगर शब्द के द्वारा कथन होखे त 'पूर्णोपमा' (पूरा उपमा) होई।

उदाहरण- **छुई मुई रानी सुकुआरि धान, पान अस,**

चान के निसान अस देहिया के कजरी।

-चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी पृ॰ 26)

इहाँ 'रानी' आ 'देह' उपमेय, 'धान-पान', आ 'चान' उपमान, 'अस' वाचक आ सुकुआरि आ साँवलापन (कजरी) 'धर्म' बाटे। एही से इहाँ पूर्णोपमा बाटे।

लुप्तोपमा- विश्वनाथ लिखले बाड़न-

''लुप्ता सामान्यधर्मादेरेकस्य यदि वाद्वयो।।17।।

-साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 265

मतलब कि, उपमेय, उपमान, धर्म आ वाचक में से एगो कवनो गायब होखे त लुप्तोपमा अलंकार होखी।

उदाहरण- **इहाँ के नारी विरताई**

दुर्गा काली के अवतार

-रामवचन शास्त्री 'अंजोर' (किरनमयी पृ॰ 6)

इहाँ 'भारतीय नारी' उपमेय, 'दुर्गा काली' उपमान आ 'वीरताई' धर्म बाटे। वाचक गायब बा। एही से इहाँ लुप्तोपमा अलंकार होई।

रूपक

विश्वनाथ रूपक के परिभाषा देत लिखले बाड़न-

''रूपकं रूपितारोपो विषये निरपह्वे''

-**साहित्य दर्पण** (द॰प॰), पृ॰ 303

जहाँ उपमेय में उपमान के आरोप करके दुनों के अभेद वर्णन कइल जाय, त उहाँ रूपक अलंकार होई। आरोप के मतलब इहाँ रूप दिहला से बा। जहाँ उपमेय के ही रूप दे दिहल जाय, उहाँ रूपक अलंकार होला। आरोप में समानतावाचक पद के कथन ना कइल जाय। उपमेय के उपमान के रूप दिहल जाय, तबहुओ उपमेय के साथ रहल जरूरी होला। रूपक में तीन गो बात जरूरी होला-

(क) उपमेय के उपमान के रूप दिहल

(ख) वाचक पद के अभाव

(ग) उपमेय के भी साथ-साथ कथन।

उदाहरण: 'मुखचान बा' कहला पर उपमेय 'मुख' के उपमान चाँद के रूप से दिआत बा। वाचक आ धर्म नइखे।

रूपक के तीन भेद होला-**साङ्ग रूपक, निरंग रूपक** आ **परम्परित रूपक।**

साङ्ग रूपक-विश्वनाथ के कहनाम बा-

''अङ्गिनो यदि साङ्गस्य रूपण सांगमेवतत ।।30।।

-साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 305

जहवाँ अंग सहित उपमेय में उपमान के आरोप कइल जाला, उहाँ साङ्गरूपक कहल जाई। एह में उपमेय के अंग सब में उपमान के अवयवन के आरोप कइल जाला।

उदाहरण- **कवनों रंगीन जवान भाव**
विचार के मउरी पेन्हले
शब्दन के डोली पर परिछात
लाल पीयर पगड़ी बन्हले
अछरन के बरियात
अंगुरियन के पोर के सहारे
कलम कँहरिया के कान्ह पर
कल्पना के गाँव में आ रहल बा।

-कुमार विमल

(भोजपुरी सम्मेलन, पत्रिका, मई 90, पृ॰ 156)

इहाँ 'कलम' उपमेय के कँहरिया उपमान के रूप दिआइल बा। कलम के काम बा तरह-तरह क अक्षरन के ढोअल (लिखल)। ओही तरह 'कँहरिया' के काम बरिआत ढोअल बाटे। इहाँ सब आरोप शब्द के द्वारा भइल बाटे। एही से इहाँ साङ्ग रूपक अलंकार के सृष्टि होत बा।

एगो दोसर उदाहरण देखल जा सकत बा-

भोर बयार सँगे उठि के छिछियात फिर भटके जियराईं

-श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्री रामकथा, पृ॰ 146)

'जियरा' उपमेय खातिर 'भोर' बयार उपमान के आरोप साधर्म्य छिछिअइला आ भटकला के सँगे कइल गइल बा। वाचक नइखे। एह से इहाँ साङ्गरूपक अलंकार बा।

निरंग रूपक-विश्वनाथ के अनुसार निरंग रूपक के परिभाषा बा-

निरङ्ग केवलस्यैव रूपणं तदपि द्विधा ।। 31।।

-साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 306

अवयव से रहित उपमान के जहाँ उपमेय में आरोप कइल जाय, उहाँ निरंग रूपक अलंकार होई।

उदाहरण- **तिरिअइतिन तन रतन अटारी**

बाँकी चितवन नयन कटारी

-रघुनाथशरण शुक्ल कुबोध (के, पृ॰ 36)

इहाँ नयन कटारी में घायल करे के गुण के लेके रूपक बान्हल गइल बा। एह में अंग के वर्णन नइखे, एह से इहाँ रूपक अलंकार के सृष्टि होत बा।

परम्परित रूपक- विश्वनाथ के उक्ति बा-

''यत्र कस्यचिदारोपः परारोपण कारणम्। तत्परम्परित।''

साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 315

जहवाँ एगो आरोप दोसरा आरोप के कारण होखें, उहाँ परम्परित रूपक होई।

उदाहरण- **आशा बेलि बिरिछ लपिटावल**
आश बिरिछिया भूईं नियरावल
आशा सुमन आस वास मय
-रघुनाथशरण शुक्ल 'कुबोध' (के पृ॰ 36)

इहाँ एगो आशा (उपमेय) में उपमान फूल के आरोप अंगन के द्वारा भइल बा। जइसे, लतर, वृक्ष, फूल आ सुगन्ध के आरोप भइल बा। एही से इहाँ परम्परित रूपक बा।

दृष्टान्त

विद्यानाथ दृष्टान्त के परिभाषा अइसे देले वाड़न-

''द्वयोरर्थ योर्द्विरूपादानं विम्बप्रतिविम्बभावः।''

-प्रतापरूद्रीय, पृ॰ 311

जब पहिले कवनो बात कहि के ओकरा के समझावे खातिर दोसर बात कहल जाय आ जवन एके अइसन होखे, त दृष्टान्त अलंकार होई।

दृष्टान्त के मतलब उदाहरण भी ह। कवनो बात के कहके ओकर सच्चाई साबित करेला दोसर बात के कहल जाए त दृष्टान्त अलंकार होई।

उदाहरण- **राम कृपा अघ दूर हढे**

रवि से निशि के तम भागत लेखा।

-श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्री रामकथा, पृ॰ 56)

इहाँ पहिले कहल गइल बा कि राम के कृपा से पाप आ दुख दूर हटेला। फ्रेर एह बात के समझावे खातिर ई कहल गइल बा कि जइसे सूर्य से रात के अन्हार भाग जाला, ओइसहीं राम कृपा से पाप भागेला। इहाँ पहिले कहल बात के सच्चाई साबित करे खातिर ओइसनके दोसर बात कहल गइल बा।

सन्देह

विश्नाथ के दिहल परिभाषा बा-

"सन्देहः प्रकृतेऽन्यस्य संशयः प्रतिभोत्थितः।

साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 35

जहवाँ कवनो वस्तु के सम्बन्ध में सादृशमूलक सन्देह होखे, उहवाँ सन्देह अलंकार होई। कि, का वगैरह शब्दन के द्वारा संदेह प्रकट कइल जाला। कतहीं एकरा बिना रहलहुँ काम चल जाला-

उदाहरण–खींचत सारी दुसासन हारी

आ बूड़न लागे समुन्दर सारी

देखि चिहाँ सँउसे दरबारी

कि सारी में नारी कि नारी में सारी

–रामवचन शास्त्री 'अँजोर' (निरधन के घनश्याम पृ॰ 51)

इहाँ सारी में नारी के आ नारी में सारी के स्थिति साफ–साफ नइखे बुझात, एही से सन्देह के सृष्टि होत बा।

भ्रांतिमान

भ्रांतिमान के बारे में विश्वनाथ के कथन बा–

''साम्यादतस्मिं स्तद्बुद्धिभ्रांन्ति प्रतिमोत्थितः॥36॥

साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 311

जहाँ भ्रम से कवनो वस्तु के कवनो आन वस्तु मान लिहल जाय, उहाँ भ्रांति चाहे भ्रम अलंकार होई।

उदाहरण– **ऊपर से हरि सारी बढ़ावेले**

ज्यों झरना झरलें बहुरंगा,

चीर मुड़ै मुड़ि के सिकुड़ै,

नभ बीच बने बड़ छोट तरंगा।

ई छवि देख के डाह के मारे

मसान से दौड़ल बा सिव नंगा।

संकर कौन नया झटकारत

रोकत बा लटकारी में गंगा?

चन्द्रशेखर मिश्र (द्रौपदी, पृ., 128)

इहाँ सारी में झरना के, चीर मुड़ के सिकुड़ला में लहर के आ एह से बनत स्थिति में गंगा के भ्रम पैदा होत बा, एही से इहाँ भ्रांतिमान अलंकार होई।

विभावना

विश्वनाथ के अनुसार विभावना के परिभाषा बा–

"विभावना बिना हेतु कार्योत्पत्तिर्य दुच्यते ॥66॥

साहित्य दर्पण (द०प०), पृ० 350

कारण के अभाव में कार्य का उत्पत्ति के वर्णन से विभावना अलंकार के सृष्टि होला। विभावना में कवि कवनों विशेष कारण के बिना कार्य का उत्पत्ति के वर्णन करेला।

असवद श्रवण, परस बिनु मूरत

निसदिन ध्यान पुरूख बिनु सूरत

निरस रसत, सौरभ बिनु सूँघत

जोगी जनम नशावल।

-रघुनाथशरण शुक्ल 'कुबोध' (के पृ॰ 67)

इहाँ बिना सबद के सुने के कार्य, बिना सूरत के देखे के कार्य, बिना सूरत के पुरूष के रोज ध्यान करे के कार्य, बिना रस के रस प्रवाह के कार्य आ बिना सुंघले सुगंध के कार्य के उत्पति भइला से-वर्णन भइला से इहाँ विभावना के उपस्थिति होत जात बा।

अतिशयोक्ति

विश्वनाथ अतिशयोक्ति अलंकार के परिभाषा देत लिखले बाड़न-

''सिद्धत्वेऽध्वसायस्याति शयोक्तिर्निगद्यते ।।46।।''

साहित्य दर्पण (द॰प॰), पृ॰ 323

उपमेय के छिपा के उपमान के साथ अभेद प्रतीति करावल अतिशयोक्ति अलंकार ह। अतिशयोक्ति के अर्थ ह बढ़ल-चढ़ल कथन। उपमेय के एकदम छिपा के उपमान से ओकर अभेद देखावल-उपमान से ओकर अभिन्नता देखावल अतिशयोक्ति के विषय ह। दू अलग-अलग वस्तु में अभिन्नता देखा के, अभिन्न वस्तु में भिन्नता देखा के, सम्बन्ध

रहला पर सम्बन्ध के अभाव बताके, सम्बन्ध के अभाव में सम्बन्ध बता के आ कहीं कार्य-कारण में सम्बन्ध गड़बड़ा के अतिशयोक्ति अलंकार के चमत्कार पैदा कइल जा सकेला।

उदाहरण- **मउरल पात कुसुम कुम्हिलाइल,**

मुरूदलि ललित लता लतराइल,

विरस विपिन बिनु गंध विधूनल,

कुसुम कलि मटियावल।

-रघुनाथशरण शुक्ल 'कुबोध' (के, पृ॰ 83)

इहाँ उपमेय जीवन गायब बा, उपमान-पात, कुसुम, लता वगैरह के झड़ी लाग गइल बा, जवन जीवन के साथ आपन अभिन्नता बता रहल बा।

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'अनुप्रास' अलंकार ह।

(क) अर्थालंकार (ख) शब्दालंकार

(ग) उभयालंकार (घ) रूपक

2. उपमेय के छिपा के उपमान के साथ अभेद महसूस करावल कहाला।

(क) अतिशयोक्ति (ख) लाटानुप्रास

(ग) रूपक (घ) उपमा

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अलंकार के बारे में बताईं।

2. अलंकार के कै गो प्रकार होला?

3. कवनों दू अलंकारन के उदाहरण सहित लक्षण बताईं।

अध्याय-16

छन्द

निश्चित वर्ण आ मात्रा सब के विराम, गति, यति वगैरह से बन्हाइल शब्द योजना के छन्द कहल जाला।

छन्द के अंग के रूप में वर्ण, मात्रा, संख्या, यति, गति, तुक, चरण वगैरह पर विचार कइल जरूरी बा।

वर्ण- वर्ण दू तरह के होला-**स्वर** आ **व्यंजन**। छन्द शास्त्र में वर्ण के गिनती करत समय व्यंजन के ना गिनल जाए, खाली स्वर के गणना होला। जइसे 'स्त्री' शब्द (स्+त्+र्+ई-स्त्री) में चार वर्ण बाटे, बाकिर, एकरा के एक ही गिनल जाई काहे से कि एके गो स्वर-ई बाटे।

मात्रा-छन्द शास्त्र में स्वर के मात्रा कहल जाला। स्वर कहला से स्वर से युक्त व्यंजन भी लिहल जाला।

ह्रस्व-स्वर-एक मात्रा वाला स्वर के ह्रस्व कहल जाला। जइसे-अ, इ, उ, ऋ। जइसे-मुनि।

दीर्घ-स्वर-दू मात्रा वाला स्वर के दीर्घ स्वर कहल जाला। जइसे-आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ। एह स्वर सब के उच्चारण में एक मात्रा वाला स्वर से जादे समय लागेला। उदाहरण खातिर- गीता।

एह तरह से ह्रस्व के एक मात्रा आ दीर्घ के दू मात्रा मानल जाला।

संख्या आ क्रम-मात्रा अउर वर्ण का गिनती के संख्या कहल जाला।

लघु आ गुरु-जवना वर्ण के एक मात्रा होखे आ ऊ अनुस्वार अउर विसर्ग से रहित होखे, ओके 'लघु' कहल जाला। मतलब कि अ, इ, उ, ह्रस्व आ इनका साथ मिलल एक, दू, तीन चाहे एकरा से अधिक व्यंजन के लघु मानल जाला। जइसे-'नयन' में तीन वर्ण लघु बा।

चन्द्रविन्दु वाला ह्रस्व स्वर भी लघु मानल जाला। जइसे-'हँसी' में 'हँ' लघु बाटे।

आ, ई, ऊ त्रह वगैरह दीर्घ स्वर आ एकनी से मिलल व्यंजन वर्ण 'गुरु' होला। जइसे-नाना, मीता।

ए, ऐ, ओ, औ संयुक्त स्वर से मिलल व्यंजन वर्ण गुरु होला। जइसे-पैसा, पैना, लेखा।

अनुस्वार वाला सब वर्ण गुरु होला। जइसे-लंगा, चंगा, रंगा। विसर्गान्त सब वर्ण गुरु होला। जइसे-दु:ख।

संयुक्त वर्ण से पहिले के लघु वर्ण भी गुरु मानल जाला। जइसे-'सत्य' में 'स' 'कर्म' में 'क'।

हल् अक्षर से पहले के लघु वर्ण भी गुरु मानल जाला जइसे-'सत!' में 'स' गुरु बा।

पाद के अन्त में होखे वाला लघु वर्ण के भी कबहुँ-कबहुँ जरूरत का मोताबिक गुरु मानल जाला।

यति

'विराम' के यति कहल जाला। विराम से मतलब ई बा कि जहाँ कुछ देर खातिर ठहरल जाए।

गति

छन्द में पढ़े वाला लय के गति कहल जाला। मात्रा के संख्या पूरा भइलो पर 'गति' भा 'लय' के बिना छन्द ना बने।

तुक

पाद का अन्त में स्वर सहित वर्ण का आवृति के तुक कहल जाला। तुक का प्रयोग से कविता में एगो विशेष कर्ण-प्रियता आ कमनीयता आ जाला। तुक के ही अलंकार में **'अन्त्यानुप्रास'** कहल जाला।

पाद भा चरण

कवनो पाद के चउथा भाग के पाद भा चरण कहल जाला। छन्दशास्त्र का नियम के अनुसार कबहीं-कबहीं एक पद्य के चार से बेसी चरण होखेला। जइसे- छप्पय मे छव गो चरण होला।

छन्द के भेद

चरण का गति के आधार पर वर्णिक छन्द आ मात्रिक छन्द के तीन भेद कइल जाला-सम, अर्द्धसम आ विषम।

जवना छन्द के चारों चरण आ वर्ण के दृष्टि से समान होखेला, ओके सम कहल जाला।

जवना छन्द के पहिला आ तीसरा आउर दूसरा आ चउथा चरण समान होखे, ओके अर्द्धसम कहल जाला। दोहा-सोरठा उदाहरण बा।

जवना छन्द के चरण में कवनों नियमित समानता ना होखे, ओके विषम कहल जाला।

भोजपुरी कवितन में प्रयुक्त कुछ छन्द-

छंद

दोहा

ई मात्रिक अर्धसम छन्द ह। 'प्राकृत पैंगलम (1178) के अनुसार ९ह छन्द का पहिला आ तीसरा पाद में 13-13 मात्रा आउर दूसरा आ चउथा पाद में 11-11 मात्रा होखेला। यति पाद के अन्त में होला, विषम चरण का शुरू में जगण ना होखे के चाहीं। अन्त में लघु होखे के चाहीं। जइसे-

तीरथ राज प्रयाग जा, नहा त्रिवेणी नीर।
पाँव पूजि मुनि-लोग से, हाल कहे रघुवीर॥

-श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्री राम कथा) पृ. 56

जय जय जयकारि कर, अतुल तुमुल ध्वनि बोलि।
हरख उमँग उत्साह से, दल गरजत दिल खोलि॥

-दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह 'नाथ' (साहित्य रामायण लंका काण्ड) पृ. 43

सोरठा

ई मात्रिक अर्धसम छंद ह। 'प्राकृत पैंगलम' में सोरठा अपभ्रंश सोरठा आ सौराष्ट्रम के दोहा का उलटा कहल गइल बा (1:170)। एकरा विषम पाद में 11-11 आ समपाद में 13-13 मात्रा होला। तुक पहिला आ तीसरा पाद में मिलेला। कतही-कतहीं दूसरा आ चउथा में मिल जाला। जइसे-

समर जीति दशशीश, सिया छुड़ा पुष्पक चढ़ल।
रामचन्द्र जगदीश, लौटि रहल बाड़े अवध॥

-श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्री राम कथा) पृ. 170

श्यामल-मेघ-शरीर, लोचन लाल-विशाल के।
भजु मनवाँ रघुवीर, दूर करू भव जाल के॥

-श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्री राम कथा) पृ. 128

हरिगीतिका

ई 28 मात्रा के छन्द ह, जवना में 16 आ 12 मात्रा पर यति होला। अन्त में लघु -गुरु होखे के चाहीं। उदाहरण-

भरल पाल-घट सिर पर धइलीं, मल से मन नहववलीं।
पर निंदा धरफोरी कइलीं, केहू के ना भवलीं।
अनका पथ के रोड़ा बनलीं, आपन गरज पटवलीं।
जीवन आपन तोर मोर का 'झगड़ा' में बिनसवलीं॥

कुण्डलियाँ

कुन्डलिया विषम मात्रिक छन्द ह जवना में प्राय: छव चरन होला। एकर दू पहिल दोहा के आ पिछला चार चरन रोला के होला। एकरा ह क चरन में 24-24 मात्रा होला।

कुन्डलिया में एगो दोहा के बाद एगो रोला छन्द होला। एकर जवना शब्द से सिरी गनेस होला, अंतो ओही शब्द से होखे के चाहीं। कबो-कबो शुरू आ अंत में कई शब्द समान होलें। एही तरह से दोहा के अन्त के अंश रोला के शुरू के अंश में दोहरा दिहल जाला।

''प्राकृत पैंगलम्' के अनुसार रोला के दूसरका चरन के पूर्वांश के आवृत्ति भी तीसरा चरन में कइल जाला।

उदाहरण–

बा बिनती सिरी स्याम से, मन पावन हो थीर
गुन गाईं हम झूमि के, मन मोहन यदुवीर॥
मनमोहन यदुवीर, बखानी जसुमति छइया।
द्वापर के सिर मउर, हरि निरधन के भइया।
करत पाप अरू मोह, रटन कइला प नाम से
रहूँ चरन चिल्लाय विनय बा इहे श्याम से

–रामबचन शास्त्री 'अँजोर', (निरधन के घनश्याम), पृ॰ 16

रोला

श्वास करके वीर रस आ वर्णनात्मक काव्य में प्रयोग में आवे वाला एह मात्रिक छन्द का प्रत्येक चरण में 24 मात्रा होला। 11 आ 13 मात्रा पर विराम होला। अन्त में दू गुरु चाहे दूगो लघु होखे के चाही।

उदाहरण–

बीतल बारह बरिस, पंडवन के वन माही।
मधुसूदन के छोड़ि, न लउकल केहू दाही॥
खतम भइल अज्ञात, विराटे का रजधानी।
परगट भइले बीर, बिता सउँसे हलकानी॥

–रामवचन शास्त्री 'अंजोर' (निरधन के घनश्याम, पृ॰ 55)

आल्हा

एह मात्रिक छन्द के प्रत्येक चरण में एकतीस मात्रा रहेला आ 16 अउर 15 मात्रा पर विराम होला चाहे 8, 8 आ 15 पर विराम होला। प्रत्येक चरण के अन्त में गुरु-लघु होखे के चाहीं।

उदाहरण-**तब छाती पर भार दिआवसु, पाँच जने के एके बार,**
बीसन नवहा हुमचु दबावसु, कुँलचि उठेले सभके झार।
घंटन रहे सगल रोजाना, कवन लगाई बल के थाह,
कइ हाथिन के बल फाटत बा, उपटल नवहा माल सोखाह।
-डॉ॰ सर्वदेव तिवारी 'राकेश' (कालजयी कुँवर सिंह, पृ॰ 23)

बिरहा

ई मुख्य रूप से प्रेम आ विरह के उपयुक्त व्यंजना खातिर सार्थक लोकधुन बा। वियोग श्रृंगार के अधिकांश अभिव्यक्ति बिरहा में भइल बाटे। एह लोकधुन के जन्म भोजपुरिये प्रदेश में भइल बाटे। बिरहा के 16गो लोक प्रचलित प्रकार बा। बाकिर, एह में से एक जवना में दू चरण होला। दूसरा चरण के अन्त गुरू (ऽ) आ लघु (।) होला। साहित्यिक कृतियन मे एह प्रकार के प्रचलन जादे बाटे। कुछ उदाहरण-

लजिया दबावे मनमथवा सतावे मोसे एको छन रहलो न जाय।
लखि बल बिरवा जमुनवा के तीखा री हियरा के धीखा नसाय॥
-रामकृष्ण वर्मा 'बलवीर' (भोजपुरी के कवि और काव्य, पृ॰ 143)

नगीचे बहत रहे नदिया जमनवा से बनी लेली लोटवा उठाय।
सुनत नूँ बाड़ मोती अजुबा कहनिया हो पर ना हुँकारी चितलाय॥

-मधुकर सिंह (रूक जा बदरा, पृ॰ 16)

झूमर

लोकगीतन में, खास करके भोजपुरी लोकगीतन के ई प्रिय गीत प्रकार ह, जवना में शृंगार का दूनू पक्ष के वर्णन आवेला। एकर लय मस्ती से भरल होखेला। उदाहरण-

का जनिहें का जनिहें का जनिहें हो
दुख मोर कन्हाइया का जनिहें
बीच डहरिया में फोरले गगरिया
घरवा में अइले व मरली मतरिया
गागर के दमवा चुका जइहे। ॥ दुख॥

-रामसूरत राम (गोपी विरह, पृ॰ 56)

सोहर

ई लमहर बहर वाला छन्द प्रकार ह, जवन औरत के गर्भधारन के बाद से लेके पुत्र जनमला के बाद तक गावल जाला। हर पाँति के अन्त में हहें चाहे हो जरूर गावल जाला। हर दोसरका 'पाँति' में 'ए ललना' चाहे अउरू कवनो सम्बोधन कइल जाला। जइसे-

आवहु मोर परोसिन, गीत दयादिन हो ललना,

होरिला जनमवा के सोहर, गाइ सुनावहु हो।

-लोक प्रचलित गीत (भोजपुरी लोकोक्ति और मुहावरे, पृ॰ 16)

आनन्द घर-घर अवध नगर नौबत बाजत हो ललना,

बढ़ि अइले हिया से हुलास सुमंगल साजत हो।।1।।

रघुकुल कमल दिनेस अवध में उदय लेलन हो ललना,

खिली गइल जस सबलोक सुनत मन मोद भइल हो।।2।।

-कवि हरिनाथ (भोजपुरी कवि और काव्य, पृ॰ 163)

सवैया

सवैया के कवनो एगो लक्षण नइखे। एकर चरण 22 से 26 वर्ण वाला होला। ब्रजभाषा का एह प्रचलित छन्द के आन-आन भाषा का पद्य-रचना खातिर खूब उपयोग भइल बा। एकर प्रमुख भेद-पाँच छव गो बाटे। 22 अक्षर के मालिनी आ मदिरा सवैया भी कहल जाला। 24 अक्षर वाला दुर्मिल सवैया में सात मगन (।।ऽ) आ एगो गुरु होला। 23 वर्ण का मत गयंद सवैया में सात गो भगण (ऽ।।) आ एगो गुरु होला। 23 वर्ण का मत गयंद सवैया में सात गो भगन (ऽ।।) आ अन्त में दू गो गुरु होला। एकरा के मालती सवैया भी कहल जाला। 24 अक्षर वाला दुर्मिल सवैया

में आठ गो सगण (।।ऽ) होला। किरीट सवैया (24 वर्ण) में आठ गो भगण (ऽ।।) होला। सुन्दरी सवैया (24 अक्षर) में आठ गो सगण (।।ऽ) आ एगो गुरु रहेला। सुख सवैया 26 वर्ण के होला, जवना में आठ गो सगण (।।ऽ) आ अन्त में दू गो लघु होला।

भोजपुरी के कवि लोग मतगयंद या मालती सवैया के रचना प्रचुरता के साथ कइले बा। भेजपुरी में खोजला पर दुर्मिल आ किरीट सवैया के उदाहरण भी मिलेला। उदाहरण–

मतगयंद (मालती)–

पाहन ऊपर राज निदेश लिखा सगरो रखले रघुराई
वञ्चक चोर लुटेर तथा नर घातक के शिर काटि टँगाई
जे अनुशासन ना मनिहें अपवाद बिन चठ दण्ड दियाई
मोर निहोर न धर्म विरूद्धल काज करीं कवहीं पुर माई

–श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्री रामकथा, पृ॰ 56)

दुर्मिल

सुखदायक नेहत जे सबके हितकारक मातु-पिता हउवे
जग के मरूभूमि-पियासल आकुल हेतु सुधा सरिता हउवे

जवना सिय नायक के महिमा लखि लाजत कल्पलता हउवे
उनुके पद पुष्प चढ़ावल, पाटल सप्तशती कविता हउवे

-श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्री रामकथा, पृ॰ 56)

किरीट-

पोषल-सुन्दर-तेज कुरंगम, रावण मारिच के बहकावल
देखि सिया भइली 'ति लोभित, हम लजावत लेप लगावल
हे प्रभु स्वर्णमृगा तन छाल हमें इति दी अनवा मन भावल
ई सुनते रघुनायकजी धनुसायक ले गइले अनु धावल

-श्रद्धानन्द पाण्डेय (श्री रामकथा, पृ॰ 56)

कवित

ई वर्णिक दंडक छन्द ह। एह में 26 से लेके 33 तक ले वर्ण प्रत्येक चरण में होला। अन्त में गुरु-लघु-गुरु के कतहीं-कतहीं भेद कर लिहल जाला। 31 अक्षर के कवित्त मनहरण, 32 के अलहरण आ रूप घनाक्षरी अउर 33 के देव घनाक्षरी कहाला।

घनाक्षरी (31 वर्ण), अन्त में गुरु होला। एकरा सोलहवाँ वर्ण पर चरण का अन्त में यति होला। उदाहरण-

सारी बहुआरी बाटै विविध किनारी बाटै,
सलमा सितारी बेल बूटी धूप छहियाँ।
फीक बाटै, गाढ़ बाटे, लागल, पहाड़ बावे,

मखमली पाढ़ बाटे सिलिक मखनहियाँ।
रघवा जउ होत आज आगे ठाढ़ि होई जात,
पूछि लेत कान्ह ले पकड़ि दूनऊँ बहियाँ।
मोरे आगे कमरी तू ओढ़ के चरउल गाई,
बोल कान्ह सारी कहाँ पउल रेसमहियाँ।

-चन्द्रशेखर मिश्र (द्रोपदी, पृ॰ 125)

चौपाई

ई मात्रिक सम छन्द ह। प्राकृत आ अपभ्रंश का 16 मात्रा के वर्णनात्मक छन्दन का आधार पर विकसित हिन्दी आ आधुनिक भारतीय भाषा के सर्वप्रिय आ आपन छन्द ह। पाद का अन्त में दू गो गुरु होला। तुक पहिला चरण के दोसरा से आ तीसरा के चउथा से मिलेला। यति पाद के अन्त में होला, जइसे-

जब से राम व्याहि घार अइलें।
अवध मोद मंगल नित बढ़ले॥
देस नगरपुर राज पनपलें।
प्रजा मुदित सुख सगर बरिसलें।

-दुर्गाशकर प्रसाद सिंह ''नाथ'' (साहित्य रामायण, अयोध्या आ अरण्य काण्ड, पृ॰ 5)

टूटल ताहि समय मुनि ध्याना।
देखहिं राजकुमार समाना॥
शिशु किशोर बालक बनवासी।
शिलाखण्ड बइठल सन्यासी।

–अर्जुन सिंह 'अशान्त' (बुद्धायन, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, जुलाई 60 पृ॰ 2)

बोध प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. दोहा कवन छन्द ह।

(क) वर्णिक (ख) मात्रिक

(ग) अर्ध सम (घ) पूर्ण सम

2. 'कवित' कवन छन्द ह।

(क) वर्णिक (ख) मात्रिक

(ग) विरहा (घ) सोहर

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. छन्द के परिभाषा बताईं।
2. छन्द का अंगन के परिचय दीं।
3. कवनों दू छन्दन के उदाहरण सहित 'लक्षण' बताईं।

रचना खण्ड

अध्याय 17

पत्र-लेखन

मीडिया मोबाइल के युगो में चिट्ठी भा पाती भा पत्र के जरूरत आ महत्व बनल बा। चिट्ठी भा पाती दिल के बात दोसरा से निश्छल आ बेधड़क बतला देवे वाला स्वाभाविक आउर प्रभावशाली लिखित माध्यम ह। चिट्ठी के जरिये पत्र-लेखक आ पाठक के दिल के तार जुड़ेला। दिल भावना के धारातल पर कबहुँ उतराये लागेला त कबहूँ अतल सागर में गोता लगावे ला, डूबे ला, तैरे ला। जैसे बक्सा के चाभी खोलेला ओइसहिं दिल के दुआर खोलेले चिट्ठी।

हिन्दी वैयाकरण लोगन के अनुसार पत्र तीन प्रकार के होला।

1. सामाजिक भा व्यक्तिगत पत्र-जइसे कवनो संबंधी के इहवाँ लिखल संदेश पत्र, निमंत्रण पत्र, बधाई पत्र, शोक संदेश।
2. व्यावसायिक भा व्यापारिक पत्र-लेन-देन, क्रय-विक्रय से जुड़ल पत्र।
3. सरकारी भा कार्यालयीय पत्र-स्कूल, कॉलेज, सरकारी दफ्तर से जुड़ल आवेदन भा प्रार्थना पत्र।

भोजपुरियो में कुछ-कुछ इहे स्थिति बा। अंतर अतने बा कि व्यक्तिगत भा सामाजिक पत्र के चिट्ठी भा संदेश भा पाती भा पत्र कहल

जाला आ शेष दूनों के अर्जी भा प्रार्थना पत्र में समेट दिहल जाला। एह प्रकार से भोजपुरी में पत्र दू प्रकार के होला।

1. चिट्ठी भा पाती,

2. अर्जी भा प्रार्थना पत्र।

चिट्ठो भा अर्जी लिखल एगो कला ह। जेकरा में नीचे लिखल विशेषता होखे के चाही-

1. छोटहन बाकिर पूरा- दुनिया के रफ्तार बड़ा तेज बा। लाम-लहकर चिट्ठी पढ़े के धीरज सबके पासे नइखे। एह से चिट्ठी नपल-तुलल शब्द में लिखे के चाहीं। बाकिर अइसनों ना होखे के चाहीं कि संक्षेप के फेर में बात छोड़ दीहल जाए भा भाव के बुझौवल बना दिहल जाए।

2. प्रभावशाली-जवन भी विचार होखे ओकरा के राफ-साफ शब्द में प्रभावशाली ढंग से रखे के चाहीं, जे पढ़े वाला के प्रभावित क सके।

3. शुद्धता आ स्वच्छता-भाषा में शुद्धता आ लिखावट में सफाई होखे के चाहीं। सोच-समझ के लिखे के चाहीं, काट-छाँट से बचे के चाहीं।

4. विनम्र भाव में स्पष्ट विचार- चिट्ठी में विचार स्पष्ट होखे के चाहीं। लागेवाला बात भले काहे ना होखे, उहो विनम्र भाव से कहे के चाहीं।

5. सहज आउर स्वाभाविक भाषाशैली-पत्र के भाषा आ शैली सहज आउर स्वाभाविक होखे के चाहीं। कठिन शब्दन के प्रयोग से बच के सीधा-सादा शब्द में आपन विचार स्पष्ट रूप में आ खुल के प्रगट करे के चाहीं।

6. बाहरी सजावट-फीको पकवान ऊँचा दाम में बिका जाला, अगर दोकान ऊँचा होखे। मतलब कागज बढ़िया होखे, लिखावट सुन्दर आ साफ होखे। चिट्ठी के जरूरी अंग शीर्षक, तारीख, अदब, अनुच्छेद आ अंत अपना नियत स्थान पर आ क्रम से होखे के चाहीं। पत्र के ऊपर पता ठिकाना पूरा आ स्पष्ट होखे के चाहीं, उचित स्थान पर वाजिब दाम के टिकट लगावे के चाहीं।

चिट्ठी पतरी के अंग

चिट्ठी हाड़-मास विहीन जीवंत दूत ह। दूतरूपी मनुष्य के जैसे मोटा-मोटी सिर, गरदन, धड़ आ पैर के चार अंग में बाँटल जाला ओइसहीं पत्र के चार अंग मानल जाला। सिर के 'आरंभ', गरदन के 'अभिवादन', धड़ के 'विचार' आउर पैर के 'अभिनिवेदन' भा 'समापन' कहल जा सकेला। नीचे खिंचल आरेख के माधयम से एकरा के आसानी से समझल जा सकेला-

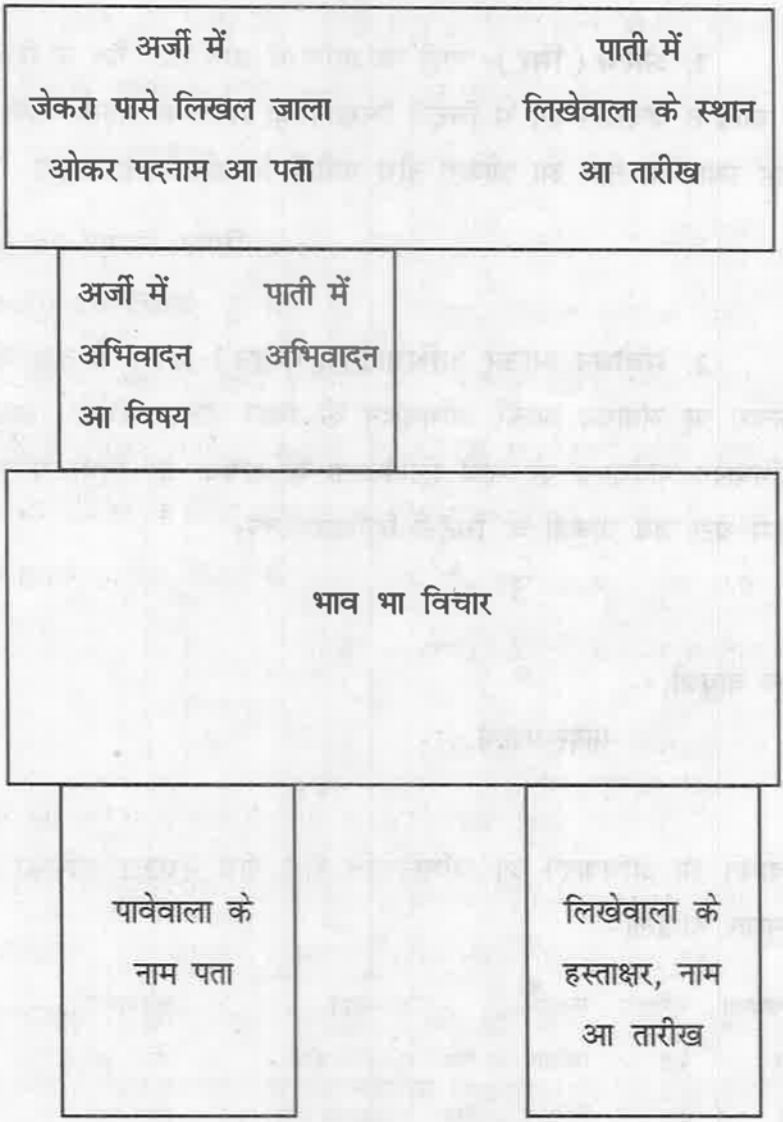
अर्जी में
जेकरा पासे लिखल जाला
ओकर पदनाम आ पता
पाती में
लिखेवाला के स्थान
आ तारीख
अर्जी में
अभिवादन
आ विषय
पाती में
अभिवादन
भाव भा विचार
पावेवाला के
नाम पता
लिखेवाला के
हस्ताक्षर, नाम
आ तारीख

अब पाती के अंगवन के बारे में तनिक विचार हो जाव-

1. **आरंभ (सिर)**- पाती के आरंभ में अगर लेटर पैड के स्थिति ना होखे त जवना स्थान से चिट्ठी लिखल जा रहल बा दहिना कोना में ओह स्थान के नाम आ ओकरा नीचे तारीख लिखल जाला। जइसे-

सिपार, सिवान-841507

तारीख-12-05-06

2. **संबोधन आऊर अभिवादन (गरदन)**-आरंभ के बाद बाँये किनारा पर संबोधन आऊर अभिवादन के स्थान होला। संबोधन आऊर अभिवादन पावेवाला के साथ लिखेवाला के संबंधा पर निर्भर करेला। जइसे-बेटा जब बाबूजी के चिट्ठी लिखिहन तब-

पूज्य बाबूजी,

सादर प्रणाम,

संबोधन आ अभिवादन आ अभिनिवेदन नीचे नीचे लिखल तालिका के अनुसार होखेला-

लिखेवाला	पावेवाला	संबोधन	अभिवादन	अभिवादन
बाप	बेटा	चिरंजीव भा प्रिय	शुभाशीष/जीअ	तोहार बाबूजो
माई	बेटा	चिरंजीव भा प्रिय	शुभाशीर्वाद/खुश रह	तोहर माई
बेटा	बाप	पूज्य बाबूजी	सादर प्रणाम/चरणस्पर्श	राऊर प्यारा पुत्र

बेटा	माई	पूजनीया माई	सादर प्रणाम/चरणस्पर्श	राऊर प्यारा पुत्र
बड़ भाई	छोट भाई	चिरंजीव भा प्रिय	शुभाशीष/शुभाशीर्वाद	तोहार भइया
छोट भाई	बड़ भाई	पूज्य/श्र)य भैया	सादर प्रणाम/चरणस्पर्श	राऊर छोटका भाई
पति	पत्नी	प्रिये/प्राणेश्वरी	शुभाशीष	तोहार प्राणधान
पत्नी	पति	प्रियवर/प्राणेश्वर	सादर प्रणाम/चरणस्पर्श	राऊर प्यारी पत्नी
मित्र	मित्र	प्रिय मित्र	नमस्ते	तोहार संघतिया
छोट	बड़	आदरणीय/पूज्य	प्रणाम/चरणस्पर्श	राऊर.. (जे रिस्ता होखे)
		आदरणीया/पूजनीया	प्रणाम/चरणस्पर्श	राऊर... (जे रिस्ता होखे)
बड़	छोट	चिरंजीव / प्रिय	शुभाशीष/खुश रह	तोहार...(जे रिस्ता होखे)

3. विचार (धाड़)- पत्र के इहे मुख्य भाग ह। एह भाग में पत्र लेखक अपना दिल के बात लिखे लन। भाषा सरल आ सहज होखे के चाहीं। चमत्कार प्रदर्शन से बचे के चाहीं। बार-बार एके बात दोहरावे-तिहरावे के ना चाहीं। विचार पूर्ण होखे के चाही। विचार भरपूर आ खुलल होखे के चाहीं, भाव में गहराई भी होखे के चाहीं।

4. अंत भा उपसंहार (पैर)- पत्र के अंत में दॉया कोना में पत्र पावेवाला के साथ आपन संबंध के विनम्रता पूर्वक उल्लेख करे के चाहीं।

जइसे-

राऊर दुलरूआ

अभिषेक

नोट् :- अगर छपल-छप्पावल लेटर पैड होखे तब ऊपर बायें में प्रेषक के नाम त होखबे करेला आ दहिने में पता भी होखेला. पाती के अंत में बाये तरु पावेवाला के नाम भी लिख दिहल जाला। अगर सादा कागज पर लिखे के होखे त आरंभ के जरूरत पड़ेला।

कुछ उदाहरण

बेटा के चिट्ठी बाबूजी के नामे

रानीघाट, पटना

12.06.08

पूज्य बाबूजी,

चरण स्पर्श।

रउवा सभे के आशीर्वाद से खुशहाल बानी। शुरू-शुरू में जब इहवाँ अइनी त मने ना लागत रहे। अब कुछ संघतिया बन गइल बा, जे पढ़े-लिखे में होसियार आ मेहनती बाड़े लोग। मिलजुल के पढ़िला जा, एक दोसराके मदद खातिर सभे लोग तत्पर रहेलन। अब पढ़ाई जोर पकड़ लेले बा, नया-नया किताब खरीदे के पड़ल ह। जरूरत के अनुसार मिल-जुल के त किताब खरीद लेहनी जा, बाकिर सब किताब सबके पासे चाहीं। काम चल रहल बा। पढ़ाई करे में बहुते मेहनत करे के पड़ता। दूध फल जरूरी लागता। एह से अगिला महीना में जब खर्चा भेजब त कुछ जादे पैसा भेज देहब कि किताब खरीदा जाए आ दूधो के व्यवस्था हो जाए।

आशा करत बानी की माई ठीके होई। माई से कह देब कि इहवाँ हम आराम से बानी। कवनो परेशानी नइखे। बबुआ के भी पढ़ावे पर धयान देब। चाचा-चाची के प्रणाम आउर बबुआ-बुचियन के आशीर्वाद बोल देब।

राउर प्यारा बेटा
रवि प्रकाश

भेजेवाला
रविप्रकाश
सी.वी.रमण छात्रावास
रानीघाट, पटना-6

मिले
श्री देवानन्द प्रसाद
ग्राम-सिपार, पो0-सिंघौली
जिला-सिवान-841507

बाबूजी के चिट्ठी बेटा के नामे

सिपार
18.6.08

चि. रविप्रकाश,

खुश रह

तोहार चिट्ठी मिलल। इहवाँ सभे ठीक बा। तोहार बबुआ तोहरा के इयाद करत रहेला, अब उहो पढ़े में खूब मेहनता करता। आ कहता कि हम भइयो से जादे नंबर लाइब आ हमहूँ पटना में नाम लिखाइब। तोहार माई तोहरा पढ़ाई, खुशी आ स्वास्थ्य के चिंता करत रहेली। हमनी सब के इच्छा बा कि तू खूब पढ़। पढ़-लिख के सफल आ अच्छा इंसान बन।

पइसा-कौड़ी के कवनो चिंता मत करीह। बाकिर पइसा के बरबादी भी मत करीह। अबकी बार हम पइसा भेजब ना, हम खुद आइब। जवन-जवन किताब के जरूरत होई खरीद लिहल जाइ। दूधा-ऊल के उठवना क लिह। आइब त ओकरो हिसाब किताब क देहब। अऊर सब ठी बा। गलत सोहब्बत से बचल रहीह। खूब मन लगा के पढ़, आ स्कल होख, इहे हमनी के कामना बा।

तोहार बाबूजी
देवानन्द

भेजेवाला
देवानन्द प्रसाद
ग्राम-सिपार,
जिला- बक्सर
पिन कोड- 841507

मिले,
रविप्रकाश
कमरा सं. 8
सी.वी.रमन छात्रावास,
रानीघाट, महेन्द्रू,पटना-6

मित्र के पासे चिट्ठी

मिन्टू छात्रावास
पटना कॉलेज, पटना-5
15.06.08

प्रिय आश्चर्य आनन्द,

नमस्ते।

तोहरा जान के खुशी होई कि 12वीं के परीक्षा में सब पेपर अच्छा गइल बा। आई.आई.टी. के भी परीक्षा देले बानी। पेपर बड़ा अच्छा गइल

बा। विश्वास बा कि 12वीं के परीक्षा में प्रथम त आइए जाइब, हो सकेला कि बोर्ड परीक्षा में भी कवनो स्थान मिल जाई, आ आई.आई.टी. परीक्षा में भी सफल हो जाइब। अगिला सप्ताह में हम घरे आइब। तू गाँवे पर रहिह। मेला देखे चलल जाई आ उहवाँ खूब मौज-मस्ती कइल जाई। चाचा-चाची के प्रणाम बोल दीह। छोटका के शुभाशीष बोलिह।

तोहार संघतिया
संजय

बधाई पत्र

नया गाँव, सारण
25.06.08

प्रिय रवि,

नमस्ते।

काल रोजगार समाचार पत्र मिलल। ओह में आईआईटी. परीक्षा के रिजल्ट निकलल रहे ओह में तोहार नाम आ रौल नंबर देख के पूरा गाँव झूम गइल। तोहरा बाबूजी के खुशी के ठेकाना ना रहल। गाँव के लोग कहे लगलन ई सफलता सिर्फ रवि के सफलता ना ह। ई पूरा गाँव के सफलता ह। रवि हमनी के गाँव के नाम रौशन क दिहलन आ हमनी के सीना चौड़ा क देहलन। ई शानदार सफलता पर हमरा साथे सभ संघतिया आ पूरा गाँव के बड़-बुजुरग के बधाई तू स्वीकार कर।

गाँवे जल्दी आव, सब तोहार स्वागत में आँख बिछवले बाड़न।

तोहार मित्र
सुरेन्द्र

नेवता (श्राद्ध)

मान्यवर, ...

नमस्ते ।

दु:ख के साथ सूचित करत बानी कि दिनांक 8.06.08 के सबेरे 6.00 बजे स्वर्गवास हमरा बाबा के हो गइल। 13 तारीख के ब्रह्मभोज बा। स्वर्गवासी बाबा के आत्मा के शांति के खातिर श्राद्धकर्म आ प्रार्थना सभा आयोजित बा। उपस्थित होखे के कृपा करीं।

विनीत

रामविलास आ

पूरा परिवार

नेवता (विवाह)

मान्यवर,

श्रीमान्/श्रीमती.....

परमपिता परमेश्वर के कृपा से हमरा बड़का बेटा रवीन्द्र के विआह तय हो गइल बा। बैसाख बदी अष्टमी दिनांक 28-4-08 दिन-सोमवार के तिलक आ बैसाख सुदी एकम दिनांक-06-05-08 दिन-मंगलवार के बिआह बा। बारात 06 तारीख के सबेरे बस से भागलपुर जाई। तिलक-विआह दूनो अवसर पर सपरिवार उपस्थित होके हमनी के दुआर के शोभा बढ़ाई।

दरस के अभिलाषी

देवेन्द्र प्रसाद आ पूरा परिवार

अर्जी-प्रार्थना पत्र

अर्जी भा प्रार्थना पत्र कवनो संस्थान भा कार्यालय के प्रमुख के नामे लिखल जाला। ओह में प्रार्थी आपन कवनो माँग रखेला भा कवनो शिकायत साफ-साफ लहजा में वाकिर विनम्रतापूर्वक रखेला। एकरो रूप चिट्ठी जइसन ही होला। अंतर अतने बा कि चिट्ठी में दहिना आँख खुलल रहेला-अर्जी में बॉया आँख खुल जाला।

अर्जी के आरंभ में जेकरा पास अर्जी लिखल जाला ओकर पदनाम आ पता बाँये किनारे लिखल जाला। ओकरा नीचे अर्जी के वजह लिखल जाला। विषय के बाद विनम्रतासूचक संबोधन महोदय/महोदया, महाशया महाशय लिखल जाला। ओकरा बाद आपन मॉग भा शिकायत के स्पष्ट रूप में लिखल जाला। अंतिम में मॉग भा शिकायत के पूर्ति खातिर आभार व्यक्त कइल जाला। अभिनिवेदन के स्थान पर राऊर आज्ञाकारी भा प्रार्थी भा विश्वासी लिख के आपन हस्ताक्षर कइल जाला आ पूरा पता तिथि के साथ अंकित कइल जाला।

कुछ उदाहरण

अपना मुहल्ला में पेयजल के आपूर्ति में उत्पन्न व्यवधान के दूर करे के संबंधा में संबंधित मंत्री के धयान आकर्षित करे खातिर संपादक के नाम चिट्ठी।

कंकड़बाग, पटना-20

10.05.08

सेवा में,

संपादक,

दैनिक जागरण,

पटना।

विषय- जलापूर्ति के समस्या के ले के पाठकनामा में प्रकाशित क के संबंधित मंत्री के ध्यान खींचे खातिर।

महाशय,

राउर लोकप्रिय अखबार दैनिक जागरण के माध्यम से पेयजल आपूर्ति मंत्री के धयान खींचल चाहत बानी कि हमरा मुहल्ला के पम्पहाउस के मोटर बराबर खराब भइल रहेला। सप्लाई के पाईप भी फाटल बा। जब पंप चले लागेला तब पाइप से पानी निकल-निकल के सड़क पर आ राह में फैल जाला। जल जमाव के समस्या खड़ा हो जाला। गंदगी फैल जाला। आवाजाही में परेशानी होला। घर-घर तक पानी भी पहुँच ना पावेला। मंत्री जी से ई मुहल्लावासी निवेदन करत बाड़ें कि पम्पहाउस के जीर्णोद्धार करवावल जाव, नया मोटर लगवावल जाव आ फूटल पाइप के स्थान पर नया पाइप लगवा के घर-घर तक पानी पहुँचवावल जाव। कृपा होई।

निवेदक

सब मुहल्लावासी

कंकड़बाग, पटना-20

गैरहाजिर रहला पर प्राचार्य के पास आवेदन पत्र

सेवा में,

प्राचार्य,

राजेन्द्र कॉलेज छपरा

विषय- गैरहाजिरी दण्ड माफ करे के बारे में।

महाशय,

विनयपूर्वक निवेदन बा कि 8.06.08 के हमार छोट बहिन के शादी रहल। हम घर के इकलौता क्रियाशील सदस्य बानी। शादी के सब इंतजाम हमरे करे के रहे। एही वजह से हम दिनांक 05.06.08 से 10.06.08 तक कॉलेज में ना आ सकली। गैरहाजिरी दण्ड से मुक्त करे के कृपा कइल जाए।

एकरा खातिर हम राऊर आभारी रहब।

राऊर आज्ञाकारी छात्र

रविन्द्र प्रसाद

कक्षा-11

क्रमांक-35

आई.एस-सी.

मूल प्रमाण पत्र निकलवावे खातिर बोर्ड ऑफिस के सचिव के पास अर्जी

सेवा में,

सचिव,

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति,

पटना-800001

विषय- मैट्रिक के मूल प्रमाण-पत्र निकलवावे के संबंध में।

महाशय,

निवेदन बा कि वर्ष 2007 में मैट्रिक परीक्षा दिहली रहलीं। अभी तक हमरा मूल प्रमाण पत्र नइखे मिलल। निर्गत करे के आदेश देबे के कृपा करीं।

एकरा खातिर हम राऊर आभारी रहब।

राऊर विश्वासभाजी

सुरेन्द्र कुमार

क्रमांक-107

पंजीयन- 1208/2000

केन्द्र कोड- 6107

विद्यालय-उच्च विद्यालय समरदह, सिवान

परीक्षा केन्द्र-उच्च विद्यालय नबीगंज, सिवान

तारीख-15.06.08